भजन रामायण

بفرمائش لالہ رام چند ساہنی تاجران کتب خورد فروش انار کلی لاہور



اینگلو سنسکرت پریس انار کلی لاہور

ऐङ्ग्लो संस्कृत यन्त्रालय
लाहौर

श्रीगणेशायनमः ॥

भजन मुनिजी के।

ये सखि मुनिसंग बालक काके।
रतनार नैना बांके

राजा बूंझे सुनो हो मुनिजी ॥ ये दोऊ बालक काके
कौन नगर में जन्म लियाहै॥काहै नाम पिता के १ ॥
रतनार नैना बांके

रवि शशि कोटि वदन की शोभा, श्याम गौरतनजाके
राम लछमन कौशल्या जाये, दशरथ नाम पिता के,
रतनार नैना बांके

पीत वसन वैजयंती माला, कीट मुकट सिर जांके।
गोतमऋषि की नार अहल्या, तारोचरन छुवा के २
रतनार नैना बांके

मुनि का यज्ञ संपूरन करिके, गृह आये राजा के।
जिन की ममता हरि राम मे,कारज साध लियाके ४
रतनार नैना बांके

सभी सखि सीता वर मांगे, पूजन चली हैं उमां की।
तुलसीदास विध आज बना है,लेख लिखे विधनाके ५

रतनार नैना वांके ।

अथ भजन राम बनवास ।

लाओ जलझारी सियाजी मारे आवो

सुवर्ण लोटा लिया हाथ में, कौशल्या उठ धाई । आस
पौन पैं सिवन कीना, यो जोड़ो करतानें खूबबनाई १

लाओ जलझारी सियाजी मारे आवो

साठ सखि मिल मङ्गल गावें, सीतादेखन आई । कछु
सहेलीदेखन आई । हर्ईअचर्जो पिया मुखदिखलाई २

लाओ जलझारी सियाजी मारे आवो

कैकई कहे सुनो राजाजी, दशरथ मेरी क्या ठहराई ।
मेरावचन मुझे दो राजा, अबटलनेकी मैंहरगिजनाई

लाओ जलझारी सियाजी मारे आवो

तुलसीदास आशारघुवरकी, हरिचर्णबलहारी, राम
चन्द्रबनवास जो होगा, भरत होंगी रानी (कैकई)
राज की तयारी ॥ ४ ॥

तज दिए भवन तुरत लागी बन को

मात कैकई बोली मारे गाली लागे तन में, खानपी-
वनी अयोध्या छोडी, पिता को वचन राम चलेबनमें॥

तज दिए भवन तुरत लागी बन को

पिता वचन प्रमान किए हैं, धनुष बान लिए करमें ।
जबरथ हांकदियोमधुवकोआनन्दभयोमाताकैकईमन के

तज दिए भवन तुरत लागी बन को

मात कौशल्या सोच करतहै, बैठीअपने मनमें । सिया
मेरे प्यारी लगतहै, प्राणबसतहैमेरेछोटे लछमनमें ३ ॥

तज दिए भवन तुरत लागी बन को

तुलसीदास आशारघुवर की, ध्यानधरो चित मन मे ।
मातसुमित्रांयोंउठबोलीबछरोवेसुतटुम कितनेकदिन मे

आज राम दोऊ बन को सिधारे

दशरथजीनेमताउपायो, अवर लिखदिएकारे । धनुष
बाण लिएरामसिधारे, लेखनशिकरअयाआएहैंसकारे

आज राम दोऊ बन को सिधारे

चिठी नजर पड़ी लछमन ने, घोड़ा कर दिए ठाड़े ।
चिठी लछमन मन मे बांची, आज कैकईने देश निकारे

आज रम दोऊ बन को सिधारे

छूरत भरत दोऊ रोवतछोड़े, कौशल्या महतारी, नैना
उन के यों चूंवत हैं, जैसे छुटत जलके फुवारे ॥ ३ ॥

आज राम दोऊ बन को सिधारे

तुलसीदास आशारघुवरको, ध्यानधरो चित मन मे ।

सीता संग लई लछमनने, सुरत लगाई हरि ने वन के किनारे ॥ ४ ॥

रोवतसारी अवधराम वनजाई

अवधपुरी के सूने वधारे, कलरजास रनाई। छोड़ छोवनो इन्द्र भरत के, मात कौशल्या बहु दुःखपाई ॥१

रोवत सारी अवध राम वन जाई

घरमें झुरै माय कौशल्या बाहर भरत भाई। नैना उनके यों चूवत हैं जैसे छुडतहै जलके फुहारे॥ २ ॥

रोवतसारी अवध राम वन जाई

कहें राम औ पुन मेरे भाई लछमन। ऐसेनाहीवनेगी॥ सीताजीके संग लियेमें, छत्रीधर्म हमारा घट जाई॥३॥

रोवत सारी अवध राम वनजाई

तुलसीदास आशा रघुवरकी, हरिचर्णोंबलहारी। हुक्म दिया है ठाकुरजीने, सीताजीकोलछमन रथमेंबैठारी

आजरहो मेरे रघुवर प्यारे

आजकी रैन अयोध्यावस रहो, उठिजा बहुत सकारे मैं कैसे रहूं मातकौशल्या, दशरथकैकईसे वाचाटारे॥

आजरहो मेरे रघुवर प्यारे

ताऊखुदाय पालवनायो, आप रहे रखवारे। तानवा

न के सरबनसारे आदिनकैकाई ने देशनझारे ॥ २ ॥

आजरहोमेरे रघुवर प्यारे

चौदशमास गर्भमेराखे,तुमनभए मोहिं भारे । जबरथ
हांकदिए मधुबनको आज रहो मेरे आंखोंकेतारे ॥

आजरहो मेरे रघुवर प्यारे

तुलसीदास आधाररघुबरको,रामचन्द्रसिभारे । सीता
सकुलई लछमनने सूरतसगाई अय्यावनके किनारे ॥

विपतपरी को दिन लगत बुरो रे

भोर भयोजब किरन निसारे,तवसे दुखभयो रे। मात
कोशल्या ठाड़ीरोवे आंखियनजाके रुदनभरो रे १ ॥

विपतपरीको दिनलगतबुरो रे

सूनीपड़ी अयोध्यानगरी,सूनीतखतपरी रे। भरतभया
यों उठ बोले,मो दुख याको कोल नाडसो रे ॥ २ ॥

विपत परी दिन लगत बुरी रे

निकल किले से वाहर ठाड़े,भारी दुख भयोरे। मेरे
सुत बनवासी हो गए,मोदुखियां को काल न डसो रे

विपतपरी को दिनलगत वुरेरे

जब रथ हांक दियो मधुबन को,हद्द घोट भयो रे।

तुलसीदास आशा रघुवर की, राजा दशरथ जी ने प्राण तजो रे ॥ ४

बूझे भरत राम कहाँ माई

जबसे धरयो अवधनगरीसे, मोहि उदासी आई। घर गलिया औबाट बाटमें, प्रजा माता मैंनेरोवतपाई १।

बूझेभरत राम कहाँ माई

सिया बिन मेरे मन्दिर सूनो, लछमन बिन ठकुराई। राम बिना मेरी गद्दीसूनी, उलटपुछाड भरतमें खाई॥

बूझे भरत राम कहाँ माई

कहै भरत सुन माता कैकई, तैंक्यों कुमत कमाई। तुलसीदास आशारघुवरकी, इनबातनमैंनहीहै भलाई ३ ॥

जननी मैं ना जाऊं बिन रामा

सूनोभवनसूनोसिंहासन, उन बिनकुल न सुहाना ॥१॥

जननी मैं ना जीऊं बिन रामा

राम लछमण बनको सिधारे, दशरथ तजे हैं प्राना॥२

जननी मैं ना जीऊं बिन रामा

चित्रकोटको चलोरी मारी, वांही मिलेंदोऊ भ्राता॥३

जननी मैना जीऊं बिन रामा

तुलसीदास आशा रघुवरकी, हरिकी धरोधिर ध्यान॥४

भजन बनबासकी

बनमें जा हरि ने कुटीरे बनाई

भोजपत्र की बनी कुटरिया, चंदन बहुत लगाई हरि फुलबाड़ी बोई दई है, आदिनसे मृगा चुगचुग खाई॥१॥

बनही में जा हरि ने कुटिरे बनाई

राम लक्ष्मण रलके बैठे, सीता बात सुनाई, हरि फुल बाड़ी मृगा चुग गयो, मृगाकी चाल मेरे मनभाई॥२॥

बनही में जा हरि ने कुटरे बनाई

इतना वचन सुना राम लक्ष्मन मृगाकीगैल दबाई धनुषबाण लिये गैलमें ठाड़े चौकसरहनाकेरे लक्ष्मण भाई॥

बनही में जा हरिने कुटिरे बनाई

दूर जाई मृगाजोमारो, हाहाकार सुनाई सीताजीवनमें उठ बोली, अपने बीरन की लक्ष्मण करो सहाई॥४॥

बन ही में जा हरिने कुटिरे बनाई

मृगामार रामघर आये सूनी कुटिया पाई, तुलसीदास आशा रघुवरकी, सियाको बतादे मेरे लक्ष्मन भाई॥५॥

प्रेम कुटीमें जा जोगी अलख जगायो

आय अलख जोगी खड़ा पुकारे, सीताने सुनकर पायो ह
टजा जोगी मेरे आगेसे, तेरा काल हरिके हाथसों आयो
प्रेम कुटीमें जा जोगी अलख जगायो
बारां बरस वनखंडमें बीते, तेरोपार नहीं पायो, झोली
लेके मांगन निकसा, जबकौ प्यासो रानी तेरे धोरे आयो
प्रेम कुटी में जा जोगी अलख जगायो
अन्दरही धस आयो, आसन मार मढ़ी बिच बैठे, जब
जोगीयाने नाद बजायो॥३॥
प्रेम कुटीमें जा जोगी अलख जगायो
तुलसीदास आशा रघुवरकी, हरिचर्णों बलिहारी। सी
ता पकड़ झोलीमें डाली, जब जोगी लंकामें आयो॥४॥
भाई लछमन सीता कौन हरी
गिरवर चढ़के सागर देखो, नहीं कहूं जलभरनेको गई
॥१॥
भाई लछमन सीता कौन हरी
उड़ उड़ काग मंदिर बैठे, सूनी मढैय्या पड़ी॥२॥
भाई लछमन सीता कौन हरी
कै हर ले गयो लंकापति रावन, क्या काहू सिंहने भखी
भाई लछमन सीता कौन हरी

तुलसीदास आशा रघुवरकी,वनही मे विपत पड़ी॥४

भजन मंदोदरी के

करत सिंगार मंदोदरी महल में

चन्दन चौकी नहानें संजोई,केसर मल लई अंगमें,वाल वाल गज मोती,मांगभरोहैकामन हीरा मोतियनसों॥१

करत सिंहार मंदोदरी महलमें

हरि हरि चुडीयांगोरीगोरीवय्यां,मंहदीलगी दस्तनमें नवजोवन वह वनो कामनी,डोरी खिचीवाकीतोखेनैनमे

करत सिंहार मंदोदरी महल में

सोलांशृङ्गार बत्तीस आभरण,बेसरझूवगई तनमें,वनको नवन वह वनी कामनी,बिजली चमकै जैसे बादरमें॥३

करत सिंहार मंदोदरी महलमें

नौलखतारे तारखिचे,देखिये चं,दरिमें,तुलसीदास आ शारघुवरकी,सीताजीसे मिलन चली बागमें॥४॥

सीता जी से मिलन मंदोदरी आई

सीता मिलन मंदोदरी आई,संगसहेली लाई,नौलख की ओढ चूनरी,झिल मिल करत बागमें आई॥१॥

सीताजी से मिलन मंदोदरी आई

सीता बेटी जनकरायकी,चन्द्रमा घरलाई,जबचन्द्रमा

लई उजारी, नौलख तारोंकी किरन छिपाई॥२॥
सीताजीसे मिलन मंदोदरी आई

हाथ जोड़के खड़ी मंदोदरी, पर्म बात सुनाई, तुतो सत
की सीता कहिये, मेरे बालमसे रानीका विधिआई॥३
सीता जी से मिलन मंदोदरी आई

तुलसीदास आशा रघुवरकी, हरिचर्णो बलहारी, तेरी
सनकी बंदकुटाऊं, तोहेरंडपा बहनादिनको आई॥४॥
कहै सीता नार मंदोदरी सुनलीजै

पाड़मकोये बीस भुजाहैं, तोड़नको दशशीशा, तोहे रंग
योदेने आई, बंदतो कुटाऊं बहना तेतीसनको॥१॥
कहै सीता नार मंदोदरी सुनलीजै

धुवगज गजराज उभारो, कालआयोतेरे पियाको, हरि
हरि चुडियां फोड़ो बहिना, भोसी बना जोबनरंग फोको
कहै सीता नार मंदोदरी सुनलीजै

तेरी लंकामें बानर कूदें, चढोआयो जगदीश, मेघनाद
तेरोपुत्र मरेगा, बान लगैगो देवर लछमनको॥३॥
कहै सीता नार मंदोदरी सुनलीजै

तुलसीदास आशा रघुवरकी, हरिचरणो बलहारी, कहै
जानकी सुनरी बहिना, राज रहैगो तेर देवरको॥४॥

सीताजी को समझावै सूरमा रानी

सीताको सूरमा समझावै, सुनले बात हमारी, रामचन्द्र
तीन लोकी मालिक जो, सुखतो देखितो बहिना चन्द्र उजियारी॥
सीताजीको समझावै सूरमा नारी

दुख दरिद्र सब दूर होवेंगे, मनशंका जाय तुम्हारी, सत्या
नाश जायगो रावनको, ये विपता बहिना तुमपर डारी
सीताजी को समझावै सूरमा नारी

तीनलोकमें कला विराजै, रुचि रची बडिभारी, दशरथ
नन्दन जगत सुलोचन, या कारण जन्मे अवतारी॥ ३॥
सीताजीको समझावै सूरमा नारी

तुलसीदास आशा रघुवरकी, हरिचरणों बलहारी, लं
काको रावनो बोलो, बिनपति बहिना होगी तेरी ख्वारी
क्या कुमत कमाई बालम सीता हरलाये

तुमतो कहो संग दलना उनके, अब फौजां ले आये, हाथ
काग दोनों ना छोड़े, वेदोउ सुत दशरथके जाये॥ १॥
क्या कुमत कमाई बालम सीता हरलाये

राम लक्ष्मण दशरथके छौना, वै पढिहैं अब आये। सां
ची कहूं मै तुमसी वे पुत्र ब्रह्मा वरपाये॥ २॥
क्या कुमत कमाई बालम सीता हरलाये

कहैमंदोदरी सुन पिया रावन, सांची खबर आयो, तेरी लंकामें बानर कूदें, लछमन जोद्धाने बाण चलायो॥३॥

क्या कुमत कमाई बालम सीता हरलाये

तुलसीदास आशारघुवरकी, हरिसे ध्यान लगायो, भैया तेरी भक्त विभीषण, अब वाहीसे क्या बतरायो॥४॥

मत दहलाये रानी तोहे डरकाको

कुंभकर्ण बलभाई मेरो, मेघनाथ बेटासो, सागरकी भरे खाई बनी है, कोट बनो गढ़ लंकाको॥१॥

मत दहलाये रानी तोहे डर काको

चांद सूरजसे दीपक मेरे, इन्द्र टहलुवा ठाडो, पवन हमारी देत बुहारी, बैठे खाऊं बिन माता को॥२॥

मत दहलाये रानी तोहे डरकाको

सूर तैतीसों पड़े बन्दीमें, काल पड़ा मस्ताको, पाताललोकमें भाई मेरो बड़ोहै, मेरोसो लियामहिरावनको॥३॥

मत दहलाये रानी तोहे डरकाको

तुलसीदास आशा रघुवरकी, ध्यान धरी कर्ताको, राम लछमन बनको वासी, देखूंगी तमाशा उन बानरनको

समझ पिया मनमें क्यों गरवायो

तीन लोकके स्वामी, जिनकी त्रिया तुम हरलाये, तेरी

लंकाको ऐसी फूंकी,होरी फूंक प्रह्लाद बचायो॥१॥

समझ पिया मनमें क्यों गरवायो

तूं क्यों तिया भई बावरी,तुझे किन भरमायो,मेघनाद से पुत्र हमारो,जिनके बलको रानी पारन पायो॥२॥

समझ पिया मनमें क्यों गरवायो

हनुमान से पायके जिनके,संग लछमनसे भाई,धनुषबा ण लिये संग हो डोलैं,लछमन से पिया औतारी॥३॥

समझ पिया मनमें क्यों गरवायो

लंका चढि मंदोदरी देखे,रामचन्द्र दल भारी,तुलसी दास आशा रघुवरकी,चेत पिया रघुवर चढिआये॥४

अंगद बचन मान मेरे बलमा

दिन नहि चैन रैन मोको कलना। जा सागरको गर्भ करतहै,बंध गयो पुल वामें अब रहा सतना॥१॥

अंगद बचन मान मेरे बलमा

तो समझाने अंगद आयो रामचन्द्रकी पाती लायो नौ पको हिनी दलपदम अठारा सो तुम तो कहि भैय्या वाके संग दलना

अंगद बचन मान मेरे बलमा

लंका कोट अठारह नाले,रतनगढ़ समुद्र किनारे,कुम्भ करणसे भ्राता मेरे,मेघनादसे गोरी तेरो ललना॥४॥

अंगद बचन मान मेरे बलमा

लंकाचढी मंदोदरी देखे, रामचन्द्र दलभारी, तुलसीदास आशा रघुबरकी, देमिलो सीता वासे करो कुछ बलना॥

तैं चलीको भय्या धर्म घटायो

सुग्रीव तो यों चढिआयो, यहीपै बैठ गयो, सो दुखवा मोहे आप रह्याहै, सो ब्रह्माने पार लगायो॥१॥

तैं चलीका भय्या धर्म घटायो

राम लछमन बन के बासी, उनकी पाती लायो, चली धर्म रयो ना तेरो, मेरी लंकामें चढ़ आयो॥२॥

तैं चली को भय्या धर्म घटायो

तेरो पितातीवाने मारी, जिनकी संगतू आयो, येअंगदतू ऐसो बलिया, रामचन्द्र कीना वानरे लगायो॥३॥

तैं चलीको भय्या धर्म घटायो

रावन यों बतरायो। इतने बचन सुने अंगदने। अंगद नैनन नीर भरलायो॥४॥

ब्रह्म पुरीको राम पधारे

ब्रह्माजी के द्वारे जाके, ठाकुर जी ललकारें, शक्तिवान हमें तुम दीजो लंका युद्ध मचो भारीरे॥१॥

ब्रह्म पुरीको राम पधारे

ब्रह्माज्ञानी यों उठ बोले, मानो वचन हमारे, शक्ति बन वही था मेरे, से लेगयो गढ लंका वारे॥२॥

ब्रह्मपुरीको राम पधारे

इतना वचन सुना रामने, सोच किया बहभारी। बुरा किया तैं शक्ती दीनी, मारे जायेंगे भ्राता हमारे॥३॥

ब्रह्मापुरीको राम पधारे

इतना वचन सुना ठाकुर ने, अक्षर लिख दिये कारे तुलसीदास आशा रघुवरकी, शक्तीके वचन टरैनहीटारे

बीड़ा मतखा मेरे लछमन भाई

येशक्ती ब्रह्माने भेजी, तबसे लंका आई, नौअक्षोहिणी दल फूकते हैं, कौनकी गत समाल छूटे भाई॥१॥

बीड़ा मतखा मेरे लछमन भाई

याबीड़ाका सोइ खावे जन्म जती होजाइ बारां बरस नींद ना आवे तियाकी सेज खमे ना जाई॥२॥

बीड़ा मतखा मेरे लछमन भाई

बारह वर्ष सीता संग रहे, मात करके जानी, हम सोये तुम रहे पहरवा, हमनें कही ना तूने खाई॥३॥

बौडा मतखा मेरे लछमन भाइ

सोने मखि जड़ाई, तुलसीदास आशा रघुवरको, बीडा

की की लछमण सीस निवाई॥४॥

तेरो दल लछमण अबना बचैगो

अनगिन बान चलें लंकासे, बानसे बान भिडैगो, लछम
ण भय्या मारे जायगे, अवधपुरीमें सोच पड़ैगो॥१॥

तेरो दल लछमण अबना बचैगो

कुम्भकर्ण जोधाबल भारो, वोभी आन लड़ैगो, सारे द
लका भच्छण करजा, तबहूं न भय्या वाकोपेट भरैगो॥

तेरो दल लछमण अबना बचैगो

हनुमान जोधाबल भारी, मुद्गर हाथ गहैगो, धुवां कै
सौ पहल उड़ावै, रात दिन जोधा युद्ध करैगो॥३॥

तेरो दल लछमण अबना बचैगो

कहैवज्रऔर सुनो ठाकुरजी, करता भली करैगो, दल
सौदास आधारघुवरको, जिनपै ठाकुर हाथ धरैगो॥४

या शक्तीने बादर फारे

मार बान हमारे इत लछमण की लाश पड़ीहै, इत
उत तो मेरा मन हंकारे॥१॥

या शक्तीने बादर फारे

मेरी सूनी गढ़लंका लछमण, धौके दिखलावारे, रावण

घरमे आनन्द वधाई, बाजतहैं जाके अभय नगारे॥२

या शक्तीने बादर फारे

शक्तीबान असुरन छोड़े। लछमण, लंकामें आवे, लछम
घटूट घरनपै आवें। तासुखसे तब प्रगट उजारे॥३॥

या शक्ती ने बादर फारे

शक्तीबान असुरने छोड़े, बानसे बान भिड़ाये, तुलसीदास
आशा रघुवरकी। हनुमत जोद्दा भयेहैं सहाये॥४॥

पंछी बन मोर सभी कुमलाये

सागर झील बनाये जीव जन्तु। अरु पंखपखेरू सभी
मिलके मतीपै आये॥१॥

पंछी बन मोर सभी कुमलाये

जबकोयल एक शब्दसुनाये, ठाकुरको समझावे। पियारा
नौके कारनेरे। लछमण भैय्या तैंने काहेको मराये॥२॥

पंछी बन मोर सभी कुमलाये

शक्तीबान लगो लछमनको, सिंहासन ठहराये सूबे खास
रहे ठाकुरके। सिरपर काग बाज मनराये॥३॥

पंछी बन मोर सभी कुमलाये

जो लछमण तेरो सुनों वधाई। कंचनहू लुटाई। तुलसी

दास आशा रघुवरकी, लिख अंगदले आये॥४॥

लिखपुर्जी अंगद ले आये

हरिसे वचन सुनाये, अन्नी अन गिन बानचलैं लंकासे, लछमण भैय्यातेरे आन बताये॥१॥

लिख पुर्जी अंगद ले आये

सिंहासनसे कर्ताधाये, मांझ दलन के आये, बीड़ा डारी मांझ दलनमें आये, लछमन भैय्या मेरे कहा समाये॥२

लिख पुर्जी अंगदले आये

तुलसीदास आशारघुवरकी। हरिसे ध्यान लगायो, बी डारी बीच दलमें, हैकोई जोधा सजीवन लावे॥३॥

बीड़ा डारो हरने दल बीच आये

यो बीड़ा ठाकुरजीने डारो, सोनेबीच जड़ायो, या बीड़ा सोही खायगो। बैदको लावे दर हाल बुलाये॥४॥

बीड़ा डारो हरने दल बीच आये

अंजनी पुत्र। बीड़ा वोही चवाये, धरछालंग जो धाने मारी सोवत वैद जानी लिये उठाई॥२॥

बीड़ा डारो हरने दलबीच आये

लेकैवैद दलबीच आये, लिये दरहाल बुलाये, हाथजोड़

कती वेडारे, लछमण मैय्या मेरे दीज्यो जिलाये॥३॥

बीड़ा डारो फरने दलबीच आये

नाआई वा नाही कोई बूटी, कहेबात समझाये तुलसी

दास आधारघुबरको। हैकोई जोधा सजीवनलावे॥४॥

लगोहै बान कोही लछमन जाय

रामदलनमें बीड़ा डारो। बीड़ा कोही नाही खाय अं

जनी पुत्ररामकापायक, भरी सभामें बीड़ाखायचबायो॥

लगोहै बानाकोही लछमन जाय

खाबीड़ा और चले पवनसुत, पर्बत पुरको धाये, खबर भई

जब असुर नगरमें। बीचबाजार रावनने लगायो॥२॥

लगोहै बान कोही लछमन जाये

सारी रैन बाजरों बीतो, प्रभाते उठिआयो, सुधलईहै

लछमनजीको हाथ जोड़ मैय्या रुदन मचायो॥३॥

लगोहै बान कोही लछमन जाये

परवत२फिरै पवनसुत। मूलहाथ नहीआये। सारो

पर्बत नरतोंदेखो। सो परवत करपै धरिलायो॥४॥

लगोहै बान कोई लछमन जाये

ले सजीवन चले पवनसुत। राम दलनको आये।

राम मिलाय लछमन जाए, तुलसीदास हरिके गुन गावे॥

भजन सुलोचना के

हात कलम स्याही मंगवाई

पुर्जा लिखा भलाई। पहिले नाम लिखो ठाकुर को, पीछे तेरी बड़ाई॥१॥

हात कलम स्याही मंगवाई

खबर भई हस्तन कर्तासे। कागज करो सफाई। लछमण भैय्या ऐसे बोले। जैसे जल बिच कमल तराई॥२॥

हात कलम स्याही मंगवाई

पहिलों बान चला लंकासे, लग्यो भुजामें जाई, उड़के भुजा गई भवनमें। सीस गयो जहां बैठे रघुराई॥३॥

हात कलम स्याही मंगवाई

लंकाचढ़ी मंदोदरी देखे रामचन्द्र दलभारी, तुलसीदास आशा रघुवरकी। मेघनाद अब हारो लड़ाई॥४॥

उड़के भुजा गई भवनमें

सोच भयो सब दलमें। मेघनादकी भुजा देखके। भय मानी बड़े बड़े असुरनें॥१॥

उड़के भुजा गई भवनमें

कहैमंदोदरी सुन पिया रावन, आगलगे तेरे दलमें, मेघनादसे पुन हमारे। सो मारे लछमन ठाकुरनें॥२

छडके सुजागई भवनमें

त्रियाजात बुद्धिकी ओछी, क्यों घबरावै मनमें, राम लछमन बनके बासी, पकड़ मंगाऊं छिया एक छिनमें॥३॥

छडके सुजागई भवनमें

कहैमंदोदरी सुनपिया रावन तैं मेरी एकनमानी। तुलसीदास आशारघुवरकी। तौपै तेगगही रघुवरनें॥४॥

देख सुजा मनमें घबराई

आंखियन आंसूलाई। ऐसो जोधा कौन दलमें जिन मारो मेरो बलदाई॥१॥

देख सुजा मनमें घबराई

मेरेपतिको सो नरमारे। जन्मजती होजाई। बारह बरस नौंदिन भोजन। लिया सेज खसेन जाई॥२॥

देख सुजा मनमें घबराई

बानो तो आकाश भईहै। लछमनहैं बलदाई। तेरो पतितो वाने मारो। रामचन्द्रजीको है प्यारो भाई॥३

देख सुजा मनमें घबराई

तुलसीदास आशारघुवरकी । हरिचरणों बलहारी ।

मेरे पतिको सीस मंगादे सती तोकुं गोसा सूं दिलमें आइ॥

पतिभुज देख सुलोचन रोइ

पतिभुज देख सुलोचना रोइ। करता यह कहा विचारी, इन लक्षमन तेरो कहा बिगारो। भरीती जवानीमैं रांड बनाइ॥१॥ पतिभुज देख सुलोचना रोइ

हाथ जोड़के खडी मंदोदरी। मरम बात सुनाइ। तेरो पतितो लडे रणमें। जानैभुजा किसीकी उड आइ॥२

पतिभुज देख सुलोचना रोइ

रोकर जोर कहै सुलोचना। नहिंजा बात सुनाइ। मेरो पति मरवायो तैंने। अब तोहे नींद सासू सुखकी आइ॥३

पतिभुज देख सुलोचना रोइ

योमत जानतुं येक्या मरोहै। लंकारहैना कोइ। तुलसी दास आशारघुवरकी। सबहीकी मौत सियाले आइ॥४

मेरे पियाको सासू सीस मंगादे

मेरे पतिको सीस मंगादे। मोको संग जरादे। पान मिठाइ मेवा लेकै सग चितापै होम करादे॥१॥

मेरे पियाको सासू सीस मंगादे

राम लछमन दशरथके छौना, उनको मोहे बतादे, मेरो पति लछमनने मारो, उनकी सिया सासू उलटी भेजादे॥

मेरे पियाको सासू सीस मंगादे

ससुर हमारो भक्त विभीषण, उन्हीको बुलादे, है कोइ जो था तेरे दलमें, वा योधाको सासू दलमें दिखादे॥३॥

मेरे पियाको सासू सीस मंगादे

तुलसीदास आशा रघुवरकी, हरिसे ध्यान लगादे, ससुर हमारो रावन कहिये, वाहीसे सासू मोरी अर्ज सुनादे॥

लेओ बहू सीस मिलेगो हरिसे

मन्दोदरी परवानो बाची, काटो सीस धरसे, सुलोचना राजनकी बेटी, अब क्या हो बहू शोच करसे॥१॥

लेओ बहू सीस मिलेगो हरिसे

हाथ जोड़ कर खड़ी सुलोचना, बात करे सासूसे, मेरो पति लछमनने मारो, खाय पछार गिरो सो धरनमें॥

लेओ बहू सीस मिलेगो हरिसे

बैठो विमान जबगई सुलोचन, रामचन्द्र के दलमें, कंकि या ससुर विभीषण तेरो, ढूंढवा बैठो बहू सारे दलमें॥

लेओ बहू सीस मिलेगो हरिसे

चन्दन काटो चिता बनाओ, क्या हो फिकर करेसी, तुलसी दास आश रघुवर की, अब गत होगी पिया की संग जरेसी॥

राम मिलन की बाने करि है तयारी

गोद नारियल अंचल डारे, मोतियन मांग सुधारी, सफेद वस्त्र पहन सुन्दरी, लाल सी अंगिया जरद किनारी॥१॥

राम मिलन की बाने करी है तयारी

अनवट सोहे बिछुआ सोहे, पावन नेवर भारी, बायें भुज बाजूबन्द सोहे, गलबिच सोहे वाके हार हजारी॥२॥

राम मिलनकी बाने करी है तयारी

मुखकमल रतनारे नैना, नथ सोहै झलकारी, नख सिख सेती गहना सोहै, मस्तक बिन्दा वाके टीका है हजारी॥

राम मिलनकी बाने करी है तयारी

बैठ विमान चली सुलोचना, रामचन्द्र के दलमें, तुलसी दास आश रघुवर की, हरि चरणों तों जाऊं बलहारी॥

दीजियो हरि सीस सरन तेरी आई

तीन लोकके हर्ताकर्ता, सरन तुम्हारे आई, मेरे पतिका सीस मंगादो, मांग बचन सायूसे आई॥१॥

दीजियो हरि सीस सरन तेरी आई

पिया सीस लेनेआई,कर विधा बैठाई,सत्यानास जा
यो रावनका,यो विपता मोसे सहीना जाई॥३॥

दीजियो हरि सीस सरन तेरीआई

नौ अक्षोहिणी दलकहा कामका,कर्म रेख ले आई
धूप छाहमैं कभीन देखी। पर्दों में बैठे मैंने उमर
गवाई॥४

दीजियो हरि सीस सरन तेरीआई

तुलसीदास आशा रघुवरकी। हरि चर्णों जाऊं
वलहारी,मेरे पति को सीसढंढारो,असुरकरेंगेठाकुर
हंसियाई॥१॥

लावो क्योंना सीस मेरे लछमन वीर

इतना वचनसुना ठाकुरने,लछमन जी को बुलवायो,
जोतकसीरकरी रावनने,यारानीकोभैय्या क्यातकसीर

लावो क्योंना सीस मेरे लछमन वीर

फिरकें जवाब दिया लछमनने,सुन ठाकुर मेरे वीर,
जा दिनकी सुधभूल गयेहो। बड़े २ जोधा हम पर
चलावें तीर॥२॥

लावो क्योंना सीस मेरे लछमन वीर

नौ अक्षहिणी दल पद्म अठारो । इनपै परी हरि भीर । सुलोचना राजन की बेटी । कौन बंधावे त्रिया की अब धीर॥३॥

लावो ओना सीस मेरे लछमन वीर

जो सतियनको सत्त डिगावे, धिग्र् जनायशरीर, तुलसीदास आशा रघुवरकी, ऐसो लछमन तूं वे पीर॥४॥

मेरीतो प्रतिज्ञा रहै सीसके हंससे

ओ बलकहांगयो मेरे जोधा, इन्द्र बांधलियासो, कौनको संग कियो मेरे बलमा, पड़ो है सजन अन सीस कटेसे॥

मेरीतो प्रतिज्ञा रहै सीसके हंससे

हाथ फेर हरि सीस हसा है, पिछले पाप कियेसे, सो ई जोधा यों उठबोले, कोहीना बचेगी त्रिया कुलमेंसे॥

मेरीतो प्रतिज्ञा रहै सीसके हंससे

रामचन्द्रतो यौंउठबोले, जोमांगो सोदेंगे, क्या मांगूं क्या देंगे ठाकुर, राजना पायोगढ़ लंकाके बसेसे॥३॥

मेरीतो प्रतिज्ञा रहै सीसके हंससे

तुलसीदास आशा रघुवरकी, राज औतार धरेसे, अमोरवन्नवंशारा। ज्ञहमदेंगे, कलियगमेंबड़ुतेरेकहेसे॥४॥

लेकर सीस लंकामें आई

लेकर सीस लंकामें आई, रावनने सुन पाई, या त्रिया का सुख ना देखूं । यात्रियाने मेरो ज्ञान घटाई ॥१॥

लेकर सीस लंकामें आई

जो त्रिया पहिलेसे कहती, देतासीस मंगवाई, उनको दलमें तेरा क्या कामथा, मै बैठा जोधा बलदाई ॥२॥

लेकर सीस लंकामें आई

हाथ जोड़के खड़ी सुलोचना, महिमा बात सुनाई, सब कुलको तैनेनाशकिवाहै, अबतो छोड असुर असुराई ॥

लेकर सीस लंकामें आई

लेकर सीर समुद्र पर आई । चिता चिना लई धारी । तुलसीदास आशा रघुबर की । सब मेवा उसमें गिरवाई ॥

लेकर सीस बैठगई सलमें

सुआ जमा लई घरपै । संगकी सहेली यों बोली । यो पट्टे पैरता नेकना डरपै ॥१॥

लेकर सीस बैठगई दलमें

धोरे तो मंदोदरी ठाडी, नैनन आंसू टरके, पूत कन्हको देख चिता, फाट कलिजुवा डरपै॥२॥

लेकर सीस बैठगई सलपै

वारी भग्गी घीव नवडारी, भल पङ्ग्ची अम्बर पै, काढ़ खड्ग रावण भयो ठाडा मत कोई लिया अगन से डरपै॥

लेकर सीस बैठगई सलपै

तुलसीदास आशा रघुबरकी, अग्निपङ्ग्ची घर पै, अटल राज तेरी लछमन रहेगो, सुरत लागी अब हरि चर्णनपै॥

इति श्री भजन बनवासकी सम्पूर्णम्।

अथ भजन हनुमान जी के

हनुमान लंकामें आयो

गली २ लंकाकी ढूंडी, भेद कहीं नपायो, अपने मनसे मता उपायो, जाय विभीषणसे बतरायो॥१॥

हनुमान लंकामें आयो

कहै विभीषण सुनो पवनसुत, एक बुराकरि आयो, अस्सी लाख असुर लंकामें, येकले तेने बीड़ा चवायो॥

हनुमान लंकामें आयो

कहै पवनसुत सुनो विभीषण,करलो मनको चायो,द
सों सौसरावनकी काटौं,तब माता अंजनीको जायो॥३
हनुमानलंकामें आयो

तुलसीदास आशारघुवरकी,हरिचरणों चितलायो,वि
भीषणसे भेदलियोहै,जब जोधा पनघट पर आयो॥४॥
हनुमान मुद्राछिटकायो

हनुमान मुद्राछिटकायो,सीता गोदी आयो,रामचन्द्र
कहो मारे गयेहैं,कोई पांछी मुद्रा लेआयो॥४॥
हनुमान मुद्राछिटकायो

पेड़ कदमसे हनुमत कूदे,सीता धोरे आयो,तुमत री
मेरी सीता माता,तेरी सुधलेनेको हरिने पठायो॥२॥
हनुमानमुद्राछिटकायो

तूतो दूत असुर को कहिये,मो छलने को आयो,तेरी
छली मैंना छलनको,तूछलनेको या बागमे आयो॥३॥
हनुमानमुद्राछिटकायो

तुलसीदास आशा रघुवरकी । हरिसे ध्यानलगायो ॥
रामचन्द्र की आज्ञा लेके । ले मुद्रा माता तुम पास
आयो॥३॥

आह्लादो यहां से फलखाऊं

आज काल और कल परसोंके, तेल तेलिकी खाऊं, पेड़

हत्को हाथनलाऊं, कोल्हू बलियाकी मैं हाथनआऊं ॥

आह्लादो यहांसे फलखाऊं

समझायो समझो नहीं बाल । तोहे कहा समझाऊं,

जो कोई असुर आवै लंकामें । तो बलिहारे कहां

छिपाऊं ॥२॥

आह्लादो यहांसे फलखाऊं

अखियन सैन मोहे बुलावो । सैनन से भगिआऊं, जो

कोई असुर आवै लंकासे । छोटोसो जानवर मैं बन

जाऊं ॥३॥

आह्लादो यहां से फलखाऊं

तुलसीदास आशा रघुवरकी । हरिसे ध्यान लगाऊं,

बहुत दिननकी भूखो माता । विन आज्ञा माता मैं

ना जाऊं ॥४॥

मौनीजी भये बोलत अब नाहीं

लाख जतन कर मारो मोको । मैं मरनेको नाहीं

आपनी मौतमैंआपबताद्दं, तेलहूंदेतुमलेजमंगाई॥ १

मौनौंजी भये बोलत अब नाहीं

सारे लंका की रूई मंगवाई । तेल दियो छिगवाई ॥
सब असुरन की मत हरली । सहज सहज वामें
अग्नी लगाई॥२॥

मौनौंजी भये बोलत अबनाही

पहिले कारज कियो सभा में । दाढी मूछ जलाई ॥
गरज गरज के लंका जारी । येक बिभीषण को ग्रह
नाही॥३॥

मौनौंजी भये बोलत अब नाही

तुलसीदास आशा रघुवर की । हरि चर्णों वलहारी
लंका फूक समुद्र येआयो । सागर भैय्या मेरी अग्नि
बुझाई॥४॥

सिर सोहैं राम कलंगी दलमें कूदें बजरंगी

लंका से चढ़ राक्षस चले ॥ करके भुजा निरंगी, दूत
लछमन धनुष टकोरे । छुटो बाण भुजंगी॥१॥

सिर सोहै राम कलंगी दलमें कूदें बजरंगी

गोरे गोरे बदन सांवरे नैना । युद्ध करे लछमन जी ॥

छूटो बानलग्यो वाकेतनमें सुजाटूटगई अंगी॥२॥

सिर सोहै राम कलंगी दलमें कूदें बजरंगी

एक बंदरवा नाचत आवें। वही मचावे दंगी। अन
गिन लोथ पड़ी लंकामें। खेंचत हारे भंगी॥३॥

सिर सोहै राम कलंगी दलमें कूदें बजरंगी

लंका मारी रावन मारो। और रावन के संगी।
लालदास भगवान भरोसे। सिरसोहै राम कलंगी

इतिश्री भजन रामायण समापत हुई

सम्बत १९४५ फागुन

प्रगट होकि यह भजन रामायण मेने बड़ी प्रति से
छपवाईहै और सोध भी बहुत थोरा रखा है—जिस
सज्जन जनको इस पुस्तकके मंगवानेकी इच्छा हो सो
लाहौर बाजार अनारकली दुकान रामचंद मानक
टाहला पुस्तक वालेसे मंगवालेवें

औरभीसबभांतिकेपुस्तक मिल सक्ते हैं चाहेंमंगवालेवें

रामचंद मानक टाहला

अनारकली लाहौर